मरणोपरांत का जीवन

इस्लाम और हिन्दू धर्म में

लेखकः
डा. मुहम्मद असलम कासमी
Ph.D.

फोनः 9837788115
e-mails: draslamqasmi@gmail.com

प्रस्तुत पुस्तक का पूर्व नाम ‘‘परलोक की समस्या’’
अन्य पुस्तके देखने के लिए लॉगऑन करें
aslamqasmi.blogspot.com
islaminhindi.blogspot.com

प्रकाशित :

सनातन सन्देश संगम
मिल्लत उर्दू एकेडमी, सोत, रुड़की

अगर यह प्रश्न किया जाए
समस्या है जो उसके लिए सब से
परन्तु उसी पर वह कोई चिन्ता न
उत्तर हो सकता है और वह है,मृत्
समस्या। मृत्यु एक ऐसा सच है जिस
मौत को ही मनुष्य अक्सर भूला हु
क्या कारण है? शायद यह कि मृत्
तक मनुष्य अपने ज्ञान-विज्ञान की
है। आज के वैज्ञानिक दौर में जहाँ
डाल दीं हैं और हवा की लहरों को
दौर का आधुनिक विज्ञान भी परलो
पड़ता है, परन्तु क्या कोई मनुष्य मृ
नहीं। तो फिर हमें इस समस्या क
चाहिए जहाँ वह मिल सकता है
उसका समाधान करने का दावा किय
हाँ इस समस्या का हल अगर कह
पास मिलता है, केवल धर्म ही परलो
का दावा करता है परन्तु धर्म तो
किसे छोड़ दिया जाए यह एक महत्व

धर्म यद्यपि कई हैं प
मुख्यतःआस्तिक धर्मो की दो ही वि
वह जिसे हिन्दू धर्म पेश करता है,
और दूसरा वह, जिसे इस्लाम पेश
के बाद दोबारा से कोई इस दुनिय
अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग में जा
दुनिया में रहते धर्म के बताये मार्ग
व्यतीत किया है तो उस के लिये स्व

की भयानक यातनाएं हैं।

अब यह प्रश्न आता है कि इन दोनों विचारधाराओं में से किसे सही कहें, और किसे गलत ठहराए !

यद्यपि विज्ञान इस विषय पर मौन है। परन्तु सच्चाई को जानने के कुछ और भी पैमाने हैं और वे हैं, बुद्धि और विवेक ,आदि।

आइए उपरोक्त दोनों विचार धाराओं को इस कसौटी पर परखते हैं :-

आवागमनः

पहले बात आवागमन की। यह सिद्धान्त भविष्य से ज्यादा भूतकाल से सम्बन्ध रखता है जबकि स्वर्ग और नरक का सम्बन्ध पूर्णतः भविष्य से है, जो समय बीत गया, हम उसका विश्लेषण कर सकते हैं, परन्तु जो आने वाला है उसके लिए हमें समय की प्रतीक्षा करनी होगी इस सन्दर्भ में आवागमन के सिद्वान्त पर कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रश्न चिहून लगाते हैं जो इस प्रकार हैं -

१. सांसारिक इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन से साबित हो चुका है कि इन्सान से पहले अन्य जीव जन्तु, कीट पतंगों और वनस्पतियों की उत्पत्ति हुई, प्रश्न यह है कि ये वस्तुएं अगर मनुष्य के बुरे कर्मो का परिणाम हैं तो मनुष्य से पहले इनकी उत्पत्ति किस के बुरे कर्मो का परिणाम था ?

२. अन्य जीव जन्तु एवं वनस्पति इन्सान की ऐसी आवश्यकताएं हैं कि अगर ये न रहें तो इन्सानी जीवन कठिन हो जाए, अगर ये इन्सान के बुरे कर्मो का परिणाम हैं तो मानना होगा कि इन सब वस्तुओं के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये बुरे कर्म भी जरूरी हैं, जो धर्म के विरुध्द है।

३. कलयुग में इन्सानी आबादी का बढ़ना भी इस ख्याल का खंडन करता है। स्पष्ट है कि अगर अन्य वस्तुएं इन्सान के बुरे कर्मो का परिणाम होती हैं तो इस युग में इन्सानी आबादी घटती चली जाती, और अन्य वस्तुएं अधिक होती, जबकि वर्तमान में स्थिति विपरीत है।

४. अगर इन्सान का लंगड़ा-लूला,अन्धा-बहरा होना उसके पहले जन्म के बुरे कर्मो का परिणाम है,तो प्रश्न उठता है कि

आज दुनिया भर में पोलियों के खि
के लंगडा पैदा होने पर काफी हद
है। आखिर यह कैसे हुआ कि पोलि
मनुष्य के पापों के परिणाम को नष्ट

५. यह सिद्धान्त, गरीबों,
सहानुभूति और हमदर्दी को घटाता
उनके पिछले कर्मो का फल है तो
और यह धर्म की शिक्षा के खिलाफ

६.अगर इन्सानी विकार औ
ज्यादती व आपदाओं की पीड़ा, सभ
का परिणाम हैं तो फिर मानना चा
रहा है वह सब न्यायसंगत है,
तर्कसंगत है,ऐसी स्थिति में न तो कु
का आधार क्योंकि जैसा किसी ने वि

७. आधुनिक विज्ञान के अ
मनुष्य जन्तु और वनस्पति इन तीन
जीवन अलग अलग प्रकार का है,
चेतना है लेकिन आत्मा, बुद्धि विवेक
में जीव,चेतना,बुद्धि आत्मा होती है,
होता, जबकि मनुष्य में जीव आत्म
सब कुछ होता है ऐसे में क्या यह
करें पांच क्रियाओं वाला जीव, परन
क्रियाओं वाले जीव को, वह भी उ
निकाल कर, जब कि दण्ड या पुरस
और विचार से है, आप एक बुद्धिह
दण्ड, उस पर कोई फर्क नहीं पड़त
बड़ी विडंबना है कि इसके अनुसार
दण्ड भोगता है गधा.।

८. अगर मनुष्य की अपंग
कर्मो का फल हैं तो न्याय व्यवस्
व्यक्ति को पता हो कि उसके वे कौ
है। हम दुनिया में भी देखते हैं कि
कर और उस को सफाई का मौका

ईश्वर का कानून क्या इतना अन्धा है कि न बाजपुर्स (स्पष्टीकरण) और न यह बताना कि हम किस अपराध की सजा काट रहे हैं, यह कैसी न्याय व्यवस्था है ?

इस सम्बन्ध में इस्लामी सिद्धान्त बहुत स्पष्ट है वह यह कि एक दिन कयामत (प्रलय) हो जायेगी और यह सारा संसार नष्ट हो जायेगा, फिर हश्र का दिन अर्थात हिसाब किताब का दिन बरपा होगा, अतःसारे इन्सानों को पुनः जीवित किया जायेगा और उनके कर्मो का लेखा जोखा जो ईश्वर के यहाँ सुरक्षित होगा उनके सामने रख दिया जायेगा और बुरे कर्म करने वाले से पूछा जायेगा कि तूने यह-यह बुरे कार्य किये थे? तो वह मुकरने का प्रयास करेगा परन्तु उसके शरीर के अंग हाथ और पैर उसके खिलाफ गवाही देंगे। इसी का चित्रण करते हुए पवित्र ''कुरआन'' में कहा गया है :-

> (और जिस दिन) कर्म पत्रिका (सामने) रखी जायेगी तो तुम अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ उसमें होगा उससे डर रहे होंगे और कह रहे होंगें, हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसी किताब है जिस ने कोई छोटी बात छोड़ी है न बड़ी, अपितु सभी को अपने अन्दर समाहित कर रखा है जो कुछ उन्होंने किया होगा सब मौजूद पायेंगे और तुम्हारा रब (ईश्वर) किसी पर जुल्म न करेगा (१८/४५)

एक प्रश्न

कभी-कभी सुनने में आता है कि कोई छोटा बच्चा अपने पिछले जन्म की बातें बता रहा है। पहली बात तो यह है कि यह समाचार इतने छोटे बच्चों का होता है जिनकी गवाही स्वीकार्य नहीं है। परन्तु अगर इस पर शंका भी न करें तो भी ऐसे समाचार इतने कम होते हैं कि उन्हें एक सूक्ष्म अपवाद कहना उचित होगा और अपवाद तर्क नहीं बनते, दूसरी बात यह है कि ऐसा केवल हिन्दू परिवारों में ही पेश आता है जबकि अगर यह सत्य होता तो कभी-कभी अन्य परिवारों और अन्य देशों से भी ऐसे समाचार प्राप्त होते जबकि ऐसा नहीं है।

हमने आवागमनीय सिद्धान्त के विरूद्ध जो तर्क प्रस्तुत

किये हैं ये हमारे मन को विचलित
अब भी हम यही मानें कि मरणोप
संसार में कोई अन्य शरीर देकर
भी आप आवागमनीय सिद्धान्त पर
एक दूसरी कसौटी पर इस विचार
करते हैं ।

उद्देश्य केवल यह है कि
सुलझा सकें, और यह जान सकें
कहां जाती और इसका क्या होता
कष्ट से स्वयं को सुरक्षित रख सकें

जैसा कि आरम्भ में लिखा
में शत प्रतिशत मौन है अतः हम
जाता है, वह यह कि इसे जानने
जाए, जो इस समस्या को पूर्णतः हल

जैसा कि ज्ञात है कि परलो
ही विचारधाराएं हैं एक आवगवन
कोई दोबारा से इस दुनिया में न
अनंत के लिए कर्मानुसार या तो स्व
की यातनाएं।

आइए इन दोनों विचारधारा
के लिये इनके मुख्य स्रोतों की शुद्ध
परखते हैं, दोनों के स्रोतों में जो
वैज्ञानिक, बुद्धि और विवेक पर ख
और विवेक का तकाज़ा यह है कि
धारा को स्वीकार किया जाये।

आवागमन की बात अधि
पुस्तक में हमें मिलती है वह है ''म
की अगर बात की जाए तो उनमें
हुआ है, जिसका अर्थ होता है दो
जन्म, जहाँ तक दोबारा जन्म की
कहता है कि कयामत के बाद सा
देकर उठाया जायेगा और दुनिया में
का हिसाब होगा, और कर्मानुसार

डाला जाएगा, जहाँ फिर कभी मौत नहीं होगी ।

रही बात पुराणों की, उनमें भी आवागवन की बात मिलती है, परन्तु उनको बहुत से विद्वान मान्यता नहीं देते। महर्षि स्वामी दयानंद ने उनका घोर खंडन किया है। जबकि मनुस्मृति से उन्होंने अनेक तर्क प्रस्तुत किये हैं ।

तात्पर्य यह है कि मनुस्मृति ही एक मात्र वह धर्म पुस्तक है जिसमें सर्वप्रथम आवागवन को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है, अर्थात वही आवागमन की विचार धारा का मूल स्रोत है।

और विचाराधीन जन्नत व दोजख या परलोक में हिसाब, किताब के बाद अनन्त तक स्वर्ग या नरक में रहने की विचार धारा का मुख्य स्रोत है। इस्लाम की धर्मपुस्तक ''पवित्र कुरआन''

आइए थोडी देर के लिये मरणोपरांत की बात को अलग रख कर इन दोनों मुख्य स्रोतों की अन्य शिक्षाओं को इस दृष्टिकोण से आकें, कि किसकी अन्य शिक्षाएं विवेकशील स्वीकार्य, बुद्धि संगत, समाज संगत, सटीक और वैज्ञानिक हैं और किसकी विवेकहीन, अस्वीकार्य और अवैज्ञानिक हैं, यक़ीनन सदबुद्धि यही कहती है कि जिसकी अन्य शिक्षाएं अधिक स्वीकार्य हैं, परलोक के सम्बन्ध में भी उसी का कथन स्वीकार किया जाना चाहिए।

पहले इस्लाम की धर्म पुस्तक कुरआन का आकलन करते हैं। कुरआन का अवतरण सवा चौदह सौ वर्ष पूर्व इस्लाम धर्म के अंतिम पैगंबर हज़रत मुहम्मद साहब(६१०-६७०)पर अरब क्षेत्र में हुआ । यों तो वह समय ही विज्ञान, शिक्षा और आधुनिक सभ्यता का नहीं था, परन्तु अरब क्षेत्र शिक्षा व सभ्यता से अपेक्षाकृत अधिक दूर था ! यह कितना विचित्र है कि ऐसे दौर में कुरआन ने जो भी शिक्षा पेश कीं, उनमें से एक भी ऐसी नहीं है जो आज के आधुनिक दौर में भी बुद्धि या आधुनिक विज्ञान के विपरीत हो या विज्ञान उसको प्रमाणित या पुष्ट न करता हो अर्थात कुरआन में एक भी बात ऐसी नहीं है जो इस आधुनिक युग में भी अतार्किक, अवैज्ञानिक, असमाजीय या अस्वीकार्य मानी जाए, बल्कि उसकी शिक्षाएं वह हैं जिनको विरोधी भी अपनाने को विवश हैं। मसलन मानव समाज के बारे में कुरआन यह नज़रिया पेश करता है कि छोटा हो या बड़ा, काला हो या गोरा, भारतीय हो या अमरीकी, पुरूष हो या महिला, इंसानियत में सब बराबर

हैं और एक मां व बाप की संतान है

(देखें कुरआन सूरह हु

यह बताने की जरूरत नहीं
और बुद्धि ने इसे पूरे तौर पर स्वीक

जैसा कि हम जानते हैं
व्यक्ति का खून ब्राहमण के शरीर
ब्रहमण का शूद्र को। एक काले का
को। एक स्त्री का पुरूष को और
मतलब यह है कि अल्लाह ने पैद
बनाया है।

कुरआन ने अब से चौद
ऐसी-ऐसी पुष्टियाँ प्रस्तुत कीं, जिन
विज्ञान के विपरीत थीं, परन्तु बाद
हूबहू पुष्टि की। मसलन भ्रूण उत्पा
एक से अधिक स्थान पर, जिसे
और सूरह मोमिनून की आयत नं
जो कुछ पेश किया था, आधुनिक
किया। ख्याल रहे कि वह समय आ
नहीं था।

कुरआन ने चौदह सौ वर्ष
जिसको सूरह यूनुस की आयत नं ९
हैरत अंगेज़ बात यह है कि
अंहकारी,अत्याचारी और घंमडी राज
को ईश्वर कहलवाता और स्वयं
समझाने के लिये ईश्वर ने अपने
मूसा'' को भेजा परन्तु वह अंहका
दरिया में डूब कर मरा, उसकी इ
कुरआन कहता है कि हमने फिरऔन

आज हम तेरे बदन को सु
वह बाद के लोगों के

विचित्र बात यह है कि ज
उस समय फिरऔन के पार्थिव शरी

पता नहीं था कि वह कहाँ है। यह घटना १८८१ की है जब उसका पार्थिव शरीर लाल सागर में तैरता मिला, जो आज मिस्र के संग्रहालय में सुरक्षित अवस्था में रखा हुआ है ।

यहाँ दो बातें विशेष तौर पर ध्यान देने की हैं। प्रथम यह कि मिस्र के संग्रहालय में वहाँ के अतीत के राजाओं, महाराजाओं की और भी ममियां मौजूद है, परन्तु उस फिरऔन की विशेषता यह है कि उसे ममी नहीं कराया गया है फिर भी वह सुरक्षित है। दूसरी बात यह है कि उन्नीसवी सदी में आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से फिरऔन के पार्थिव शरीर पर शोध किया गया, इस पर शोध कार्य करने वाले मशहूर वैज्ञानिक फ्रांस के ''डा. मोरिस बुकाई'' थे, जिन्होंने अपने शोध में वैज्ञानिक तर्कों से इस बात को सिद्ध किया कि यह पार्थिव शरीर उसी फिरऔन का है जिसके दरबार में मूसा को भेजा गया था। उनके इस शोध कार्य पर ही उन्हे पी.एच.डी.की डिग्री दी गई थी अन्ततः जब उनके सामने कुरआन की उक्त आयत आई तो वह इस्लाम धर्म स्वीकार कर मुसलमान बन गये ।

देखें-डा.मूरिस बुकाई की मशहूर पुस्तक ''कुरआन, बाइबिल और सांइस''।

पवित्र कुरआन में साडे छः हजार से कुछ ऊपर आयतें है, यद्यपि कुरआन एक धार्मिक पुस्तक है, कोई वैज्ञानिक पुस्तक नहीं परन्तु कुरआन की कुल आयतों में करीब एक हजार ऐसी है जिनका सम्बन्ध किसी न किसी तौर पर आज के आधुनिक विज्ञान से है। यह कुरआन की सत्यता का प्रमाण है कि सत्यापित विज्ञान कुरआन की किसी एक बात के भी विपरीत नहीं गया है। यहाँ पर कुछ सूक्ष्म उदाहरण प्रस्तुत हैं -

१. चांद और सूरज के बारे में कुरआन कहता है कि यह सब अपने अपने आर्बिट्स में तैर रहे हैं (सूरह अम्बिया ३३) यह हैरत अंगेज़ इत्तफाक है कि आधुनिक विज्ञान ने भी इसी परिभाषा का प्रयोग किया है।

२. धरती की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विज्ञान कहता है कि हमारी यह धरती भी सूर्य का अंश थी फिर एक धमाका हुआ और यह टूट कर अलग हुई, इस हवाले से कुरआन कहता है कि आसमान व जमीन आपस में मिले हुए थे फिर हमने उन्हें एक धमाके से अलग किया (२१/३०)

३. कुरआन कहता है कि
हमने पृथ्वी को तुम्हारे लिये गहव
(पृथ्वी के लिए) मेखें बनाया (२१/६

यह पृथ्वी मनुष्य के लिये
उस समय स्पष्ट होता है जब हमें
तीव्र गति से घूम रही है। फिर भी
हैं, खेती-बाडी करते हैं और म
आधुनिक विज्ञान इस बात की पुष्टि
जड़े ज़मीन में गहराई तक होती हैं
कार्य करती हैं ।

४. कुरआन कहता है कि -

हमने आसमान को तुम्हारे लि

आसमान हमारे लिये सुरक्षि
अन्दाज़ा हमें तब होता तब आधुनिक
के ऊपर ओजोन की एक मोटी चा
सूर्य की हानि कारक किरणों एवं
करती है। जो अगर न रहे तो
खात्मा हो जाए।

यहाँ पर हमने पवित्र कुरआ
आयतों के हवाले से बात की है
आपको पूरे कुरआन में नज़र आयेगी

हम उन्हें (लोगों को) अपनी निश
और स्वयं उनके अपने भीतर
स्पष्ट हो जायेगा यह कि वह (कुरआन)

विस्तार से जानने के लिये देखें-मशहूर

इस तरह हम देखते हैं
हिस्से को आधुनिक विज्ञान प्रमाणि
करता है। शेष एक प्रतिशत में वह
में आधुनिक विज्ञान भी खामोश है
जिसके बारे में विज्ञान भी जुबान खो

ऐसे में विचारणीय बात यह
निन्नानवे प्रतिशत भाग सूर्य के प्र
उसके शेष एक प्रतिशत भाग (जिस

है) पर बुद्धि क्या कहती है?

यक़ीनन स्वस्थ दिल व दिमाग की आवाज तो यही है कि एक प्रतिशत भाग पर भी दिल से यकीन किया जाएं, विशेष रूप से उस समय भी, जब उसके विरोध में स्पष्ट प्रमाण भी मौजूद न हों। जैसा कि अभी प्रस्तुत किये गये हैं !

आवागवन की विचारधारा :

अब हम आवागवन की विचारधारा के स्रोत पर बात करते हैं। जैसा कि ज्ञात है कि इसका मूल स्रोत ''मनुस्मृति'' है। लिहाज़ा आइये थोडी देर के लिए परलोग की बात को अलग रखते हुए उसकी भी अन्य शिक्षाओं का विश्लेषण कर लें, कि वे सांइस, समाज, बुद्धि और मानव विवेक को कहां तक स्वीकार्य हैं।

''मनुस्मृति'' का पहला पन्ना ही खोलिये तो आपको बुनियादी बात जो मिलेगी वह यह है कि इन्सानी समाज चार खानों में आवंटित है पहला ब्राह्मण है जिसका रूत्बा सबसे ऊपर है, दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वेश्य और चौथा शूद्र है ।

शुद्र सब से नीचे है और ऊपर के तीनों वर्गो की सेवा करना उसका परम कर्तव्य है ।

इस पुस्तक के मशहूर हिन्दी अनुवादक ''आचार्य वाद्रायण'' पहले अध्याय के दूसरे श्लोक पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं -

> वेद का वचन है कि ''भगवान'' ने अपने मुहं से ब्राह्मण को भुजाओं से क्षत्रिय को जांघों से वेश्य को और पैरों से शूद्र को पैदा किया है।

-(मनुस्मृति पृष्ठ ७, टीकाकार आचार्य वादरायण, डायमंड पब्लिकेशन, मेरठ)

मनु स्मृति के अनुसार ब्राह्मण भगवान के सिर से उत्पन्न है, इसलिए वह सब से ऊपर है अन्य उसके बाद क्रमशः! यहाँ तक कि शूद्र को इन्तिहाई जिल्लत का जीवन जीने पर मजबूर किया गया है। वह न तो शिक्षा प्राप्त कर सकता है और न ही धार्मिक कार्य कर सकता है। श्रीराम ने शंबूक नामी शूद्र का वध केवल इसलिए कर दिया था कि उसने शूद्र होते हुए भी जप-तप करने का दुस्साहस किया था।

यहाँ पर न्याय व्यवस्था में भी सब के लिए अलग-अगल

कानून है समान जुर्म होने पर ब्रा
सजा, क्षत्रिय और वेश्य के लिए अ
लिए कठोर से कठोर सजा का विधा

शूद्र अगर आरक्षित महिला
वध किया जाए या उसकी मूत्रेन्द्रि
या वेश्य करे तो आर्थिक दंड वि
तो उसके सर के बाल मुंडवाये

-(मनुस्मृति अध्या

मनुस्मृति में यह ऊंच-नीच
यहाँ तक कि चारो वर्णो के पार्थिव
जाने के लिए अलग-अलग रास्तों से

(देखें मनु

इस दौर में यह व्यवस्था
और न ही मानव बुद्धी को और न

नियोग व्यवस्था

मनुस्मृति के अनुसार अगर
से बच्चा उत्पन्न न हो तो वह
सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। इसे
हिन्दू धर्म में पूरी आजादी है। (**देखें**
६३) यह बताने की आवश्यकता नह
एक शर्मनाक विषय है।

गोमूत्र और गोबर रस

मनुस्मृति गो मूत्र एवं गो
उसके सेवन करने की प्रेरणा देती है

(देखें मनुस्मृति अध्याय १

मलमूत्र चाहे जिसका हो, बु
अपवित्र है। चाहे वह किसी इंसान

कुछ महाशयों को यह कहते
से औषधियां बनती हैं। परन्तु मेरा
औषधियां बनाई जाती हैं तो क्या
और अगर आस्था की बात है तो अ

दिनांक २०.३.२०१० को
के महाकुंभ का एक समाचार छपा

दसियों विदेशियों ने हिंदू धर्म की दीक्षा प्राप्त की, जिन्हें पंचगव्य (गौमूत्र, गोबर, दूध, घी और दही के मिश्रण) से धार्मिक अनुष्ठान कराया गया और पंचगव्व को शरीर पर मलकर उनका शुद्धिकरण किया गया। (देखें दैनिक जागरण, २०.३.२०१०)। बुद्धि कहती है कि अपवित्र वस्तुओं से शुद्धि नहीं अशुद्धि प्राप्त होती है।

विरोधाभास

नियमों का विरोधाभास किसी भी संहिता को संदिग्ध साबित करने के लिए पर्याप्त होता है। मनुस्मृति के अध्ययन से पता चलता है कि इसमें बहुत ही अधिक विरोधाभास विद्यमान हैं। यहाँ पर एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत है।

सामान्य रूप से माना जाता है कि माँस भक्षण हिन्दू धर्म में पाप है मनुस्मृति में भी इसके स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं अध्याय ५ के श्लोक ५१ में मांस भक्षण के गुनाहगारों में मांस काटने वाले से लेकर परोसने वाले और खाने वाले को पाप लगने की बात कही गई है। परन्तु विचित्र बात यह है कि इसी अध्याय के श्लोक ३० में कहा गया है –

> **भक्ष्य पदार्थो को प्रति दिन खाने से भक्षक को किसी प्रकार का दोष नहीं लगता,** (५ - ३०)

इसी अध्याय के श्लोक २७ मे है –

> **ब्राह्मणों को माँस भोजन खिलाने की इच्छा होने पर विवेक शील द्विज को मांस को प्रोक्षण विधि से शुद्ध कर के खिलाना चाहिये, और स्वयं भी खाना चाहिये** । (५-२७)

इसी अध्याय के श्लोक ३२ में है –

> **खरीदे गये, मार कर लाये गये अथवा किसी अन्य द्वारा उपहार आदि के रूप में दिये गये किसी पशु के मांस को देवों और पितरों को समर्पित करने तथा उनका अर्चन पूजन करने के उपरान्त प्रसाद के रूप में मांस को खाने वाला दोषग्रस्त नहीं होता** (५-३२)

इसी अध्याय के श्लोक ३६ में है –

> **मन्त्रों द्वारा पशुओं को परिष्कृत करने के उपरान्त ही उनका वध करना और मांस भक्षण**

करना चाहिए यही प्राचीन
वेद की आज्ञा है। (५-३६)
अध्याय ३ में मांस द्वारा पि
कहा गया है कि.
विभिन्न पशु-पक्षियों
करने पर पितरों की तृप्ति
का उल्लेख करते हुए मनु
मनुष्य के पितर विधि विधा
मछली के मांस से दो म
मांस से तीन महीने तक,
महीने तक, पक्षियों के मांस
बकरे के मांस से छः मही
से नौ महीने तक, ऐण मृ
महीने तक, रुरुमृग के मां
शूकर के मांस से दस म
खरगोश और कछुए के म
तक तृप्त सन्तुष्ट रहते हैं
उपयुक्त पशु पक्षियों का म
को दीर्घकाल तक तृप्त स
चाहिए।
(अध्याय ३, श्लोक २
उक्त प्रकार के श्लोकों से
एक और मांस भक्षण निषेध है औ
न केवल आदेश ही हैं अपितु मांस
दीर्घकाल तक तृप्त बने रहते हैं ।
इस विरोधाभास का मतल
सकता है कि अगर एक आदेश स
गलत होगा और जहाँ एक भी ब
दूसरी के सही होने की क्या गारन्टी
यहाँ पर बिना किसी भूमिक
आयत प्रस्तुत करना उचित होगा। कु
क्या लोग कुरआन में सोच वि
यह अल्लाह के अतिरिक्त क

निश्चय ही वे उसमें अधिकाधिक विरोधाभास पाते
(४/८२)

इस आयत-ए-करीमा के सन्दर्भ में कोई टिप्पणी किये बिना मुझे यह कहने दीजिए कि जिस ग्रन्थ में इस हद तक विरोधाभास हो और जिसकी आम शिक्षाओं को ज्ञान, विज्ञान, बुद्धि, विवेक और समाज स्वीकार न करे, परलोक जैसे संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण मुद्दे पर उसकी विचार धारा कैसे स्वीकार की जा सकती है। विशेष रूप से उस समय जब उसके विपरीत अन्य विचारधारा प्रस्तुत करने वाला वह ग्रन्थ हो जिसके एक भी अंग को विज्ञान, बुद्धि या समाज ने आज तक रद्द न किया हो।

मेरा ख्याल है कि अभी तक के तर्क-वितर्क की बुनियाद पर हमें मान लेना चाहिये कि परलोक के सम्बन्ध में पवित्र कुरआन का दृष्टिकोण ही सही है। वह यह कि मरणोपरांत कोई इस संसार में वापस नहीं आता है अपितु कर्मानुसार या तो सदैव के लिये स्वर्ग का आराम भोगता है या नरक की दहकती आग।

परन्तु अगर अभी भी आप का मन आवागवन में ही अटका हुआ है तो आइए एक अन्य दृष्टिकोण से इस विषय का विश्लेषण करते हैं।

हमें यह देखना चाहिए कि कौन सी विचार धारा को छोडने में जोखिम अधिक है, ना कि यह कि कौन सी विचार धारा अपनाने में आज के दिन लाभ अधिक है, क्योंकि बुद्धिमान वही है जो भविष्य की चिन्ता करें लिहाज़ा भविष्य के अनन्त जीवन के सुख-दुख की चिन्ता आज के थोड़े से जीवन के आराम से बेहतर है। यह तो हम जानते ही है कि इस संसार का नियम है कि जो भविष्य की चिन्ता करता है वही भविष्य के जीवन का निर्माण कर पाता है। अगर एक किसान खेत की खुदाई, निराई और बुआई न करे तो क्या उसे फसल मिल पायेगी ?

इस सन्दर्भ में हम देखते हैं कि परलोक संबंधी कुरआन के कथन को छोडने में अधिक जोखिम है क्योंकि मान लो कि मैं आवागवन के सिद्धान्त को नहीं मानता और मैंने पूरा जीवन इस सिद्धान्त को प्रस्तुत करने वाले धर्म के विपरीत व्यतीत किया, तो मेरे लिए कड़ी से कड़ी चाहे जो भी सजा निर्धारित की जाए,

आना तो मुझे इसी दुनिया में है।
अगर उसके विपरीत जीवन व्यती
मनुष्य ईश्वर के आगे चीखेगा, पु
दुनिया मे भेजने का आग्रह करेगा,
धर्मानुसार जीवन व्यतीत कर सके,
जायेगी और उसे नरक की दहकती
कुरआन में है–

और लोगों को उस दिन स
आयेगा, उस समय जालिम ल
हमें थोड़ी मोहलत दे दे। अब
को स्वीकार करेंगे और संदे
चलेंगे। – (१४/४४)

और जिन लोगों ने
इंकार किया, उनके लिये नरक
वह बहुत ही बुरा ठिकाना है
जायेंगे तो उसके दहाड़ने की
ऐसा लगेगा कि वे प्रकोप से
बार जब भी उस में कोई
उसके कारिन्दे कहेंगे कि
सावधान करने वाला नहीं आ
आया था, परन्तु हम उसको झु

इंकार करने वालों
फिरत तुम्हें धोखे में न डाले
सामग्री है फिर उनका ठिकाना
वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।
किन्तु जो लोग अपने पालनह
लिए ऐसी जन्नत (सवर्ग) होगी
रही होंगी, वे उसमे सदैव रहेंगे
(३/